

डॉ० राम मनोहर लोहिया की चिन्तनधारा: एक अध्ययन

डॉ० सुनिल कुमार यादव
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ० राम मनोहर लोहिया मूलतः राजनीतिक विचारक, चिन्तक तथा स्वप्नद्रष्टा थे। उनका चिन्तन राजनीति तक ही कभी सीमित नहीं रहा। व्यापक दृष्टिकोण, दूरदर्शिता उनकी चिन्तनधारा की विशेषता थी। राजनीति के साथ-साथ संस्कृति, दर्शन, साहित्य, इतिहास भाषा आदि के बारे में उनके मौलिक विचार थे। उनकी चिन्तनधारा कभी देश-काल की सीमा तक बंद नहीं रही। विश्व की रचना और विकास के बारे में उनकी अनोखी तथा अद्वितीय दृष्टि थी। इसीलिए उन्होंने सदा ही विश्व नागरिकता का सपना देखा था। वे मानव मात्र को किसी देश का नहीं बल्कि विश्व का नागरिक मानते थे। उनकी चाह थी कि एक दे¹ से दूसरे देश में आने-जाने के लिए किसी भी तरह की कानूनी रुकावट न हो और संपूर्ण पृथ्वी के किसी भी क्षेत्र को अपना मानकर कोई भी कहीं आ जा सकने के लिए पूरी तरह से आजाद हो।¹ डॉ० लोहिया एक नयी सभ्यता और संस्कृति के द्रष्टा और निर्माता थे। लेकिन आधुनिक युग जहाँ उनके दर्शन की उपेक्षा नहीं कर सका, वहीं उन्हें वह पूरी तरह आत्मसात भी नहीं कर सका। अपनी प्रखरता, ओजस्विता, मौलिकता, विस्तार और व्यापक गुणों के कारण वे अधिकांश लोगों की पकड़ से बाहर रहे। जो लोग लोहिया के विचारों को ऊपरी सतही ढंग से ग्रहण करना चाहते थे, उनके लिए वे बहुत भारी पड़ते थे। गहरी दृष्टि से ही उनके विचारों, कथनों और कर्मों के भीतर उस सूत्र को पकड़ा जा सकता है, जो सूत्र लोहिया द² की विशेषता है, वही सूत्र उनकी विचार पद्धति है। इनका विचार पद्धति रचनात्मक है। वे पूर्णता और समग्रता के लिए प्रयास किया करते थे। डॉ० लोहिया ने स्वयं लिखा है— जैसे ही मनुष्य अपने प्रति सचेत होता है, चाहे जिस स्तर पर यह चेतना आए और पूर्ण से अपने अलगाव के प्रति संताप तथा दुख की भावना जागे, साथ ही अपने अस्तित्व के प्रति संतोष का अनुभव हो, तब यह विचार प्रक्रिया प्रारंभ होती है कि वह पूर्ण के साथ अपने को कैसे मिलाये, उसी समय उद्देश्य की खोज शुरू होती है।² कर्म के क्षेत्र में अखण्ड प्रयोग और वैचारिक क्षेत्र में निरन्तर संशोधन द्वारा नव निर्माण के लिए सतत प्रयत्नशील भी डॉ० लोहिया का एक रूपरहा है। जीवन का कोई भी पहलू शायद ही बचा हो, जिसे लोहिया ने अपनी मौलिक प्रतिभा से स्पर्श न किया हो। मानव विकास के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी विचारधारा सबसे भिन्न तथा मौलिक रही है। डॉ० लोहिया अनेक सिद्धांतों, कार्यक्रमों और क्रान्तियों के जनक हैं। वे सभी अन्यायों के विरुद्ध एक साथ जेहाद बोलने के पक्षपाती रहे हैं। उन्होंने एक साथ सप्तक्रान्तियों का आह्वान किया। इन सप्तक्रान्तियों के विषय में डॉ० लोहिया ने कहा— मोटे तौर से ये हैं सात क्रान्तियाँ, जो पूरे संसार में एक साथ चल रही हैं। अपने देश में भी उन्हें एक साथ चलाने की कोशिश करना चाहिये। जितने लोगों

को भी क्रान्ति पकड़ में आयी हो, उसके पीछे पड़ जाना चाहिए और सतत बढ़ाते रहना चाहिए। बढ़ाते-बढ़ाते शायद ऐसा संयोग हो कि आज का इंसान सब नाइन्साफियों के खिलाफ लड़ता-जूझता ऐसे समाज और ऐसी दुनिया को बना पाए जिसमें आन्तरिक शान्ति और बाहरी या भौतिक भरा-पूरा समाज बन जाय— ये सात क्रान्तियाँ इनके इस प्रकार हैं—

1. नर-नारी की समानता।
2. चमड़ी के रंग पर रची राजकीय, आर्थिक और दिमागी असमानता के खिलाफ।
3. संस्कारगत, जन्मजात, जाति प्रथा के खिलाफ और पिछड़ों के विशेष अवसर के लिए।
4. परदेशी गुलामी के खिलाफ, स्वतंत्रता तथा विश्व लोक राज के लिए।
5. निजी पूंजी की विषमताओं के खिलाफ और आर्थिक समानता के लिए, योजना द्वारा पैदावार बढ़ाने के लिए।
6. निजी जीवन में अन्यायी हस्तक्षेप के खिलाफ और लोकतंत्री पद्धति के लिए प्रथा।
7. अस्त्र-शस्त्र के खिलाफ तथा सत्याग्रह के लिए, यही सात क्रान्तियाँ डॉ० लोहिया की थी।

डॉ० लोहिया के विचारों में अनेकता के दर्शन होते हैं। त्याग बुद्धि और प्रतिभा के साथ सूर्य की प्रखरता है तो वहीं चन्द्रमा की शीतलता भी है, वज्र की कठोरता है तो फूल की कोमलता भी उनके विचारों में हैं। उनमें सन्तुलन तथा सम्मिलन का समावेश है। उनका एक आदर्श विश्व संस्कृति की स्थापना का संकल्प था। वे हृदय से भौतिक, भौगोलिक, राष्ट्रीय व राजकीय सीमाओं का बन्धन स्वीकार नहीं करते थे। उन्होंने विना पासपोर्ट ही संसार में घूमने की योजना बनायी थी, और बिना पासपोर्ट के वर्मा घूम भी आए थे। डॉ० लोहिया को भारतीय संस्कृति से न केवल अगाध प्रेम था, बल्कि देश की आत्मा को उन जैसा हृदयंगम करने का दूसरा नमूना भी नहीं मिलता है। समाजवाद की यूरोपीय सीमाओं और आध्यात्मिकता की राष्ट्रीय सीमाओं को तोड़कर उन्होंने एक विश्व दृष्टि विकसित की। उनका पूर्ण विश्वास था कि पश्चिमी विज्ञान और भारतीय आध्यात्म का असली तथा सच्चा मेल तभी हो सकता है, जब दोनों को इस तरह संशोधित किया जाय कि वे एक दूसरे के पूरक बनने में समर्थ हो सकें।⁰³

डॉ० लोहिया ने अपने जीवन में कुछ आदर्श को तय किया था, जिस पर उन्होंने चलने का प्रयास भी किया। अल्वेयर कामू द्वारा वर्णित डॉन जुआन, इडियट, एक्टर, कांकरर और क्रियेटर की जीवन शैलियों अथवा कांट आदि पश्चिमी दार्शनिकों की नैतिकता प्रधान, भोगवादी या वर्चस्ववादी जीवन शैलियों के बरवस लोहिया ने हजारों साल के भारतीय जीवन के निचोड़ के रूप में राम, कृष्ण और शिव की जीवन शैलियों को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। राम अर्थात् मर्यादित व्यक्तित्व, नियमों से बंधे हुए, संविधान और अनुशासन के बंधे हुए। कृष्ण अर्थात् तमाम नियमों और मर्यादाओं को तोड़ने वाले और अपने घरों से बाहर निकलकर सभी मनुष्यों तथा प्राणियों के साथ एकात्मभाव रखनेवाले ब्रह्मज्ञानी।

शिव अर्थात् काल की सीमाओं से परे, जो न भूत से बँधे हैं, न भविष्य से। सही मायनों में यही सर्जक का जीवन है, जो प्रवहमान काल को पकड़कर कील देता है तथा उसे शाश्वतता प्रदान करता है। उसका औचित्य अतीत या अनागत में ढूँढ़े बिना। डॉ० लोहिया को संभवतः यही जीवन अधिक पसंद थी। डॉ० लोहिया ने राम की तरह नियम और अनुशासन से जकड़ा जीवन जीने की कोशिश भी की लेकिन उसमें वे सफल नहीं हो सके।⁰⁴

राम से अधिक कृष्ण के जीवन ने उन्हें आकर्षित किया। कृष्ण के जीवन में उन्होंने देखा कि वे तमाम बंधनों को तोड़कर अपने प्यार और राग को उन्मुक्त भाव से दूसरों के साथ बाँटनेवाले हैं। उन्हें कृष्ण की इस विशेषता ने लुभाया कि उनकी सब चीजें दो या दो से अधिक हैं। दो बाप, दो माँ, दो नाम, दो शहर और अनेक प्रेमिकाएँ हैं। लोहिया का जीवन भी कुछ इसी तरह का उन्मुक्त रहा। बहुत छोटी अवस्था में माँ की मृत्यु के बाद न जाने उन्हें कितनी माँओं का स्नेह मिला। उनका अपना कोई गाँव नहीं रहा, अपना शहर, सूवा या प्रान्त नहीं रहा। उन्होंने अपने देश प्रेम को भी राष्ट्रीय भौगोलिक सीमाओं में बाँधकर नहीं रखा।

भारत माता के प्रति उनका राग धरती माता या पृथ्वी माता के प्रति राग से रंजित था। इस दृष्टि से डॉ० लोहिया का जीवन राम से अधिक कृष्ण से प्रभावित था। किन्तु उनके जीवन में शिव की कल्पना का काफी योगदान था। मानवता के कल्याण के लिए विष को पचानेवाले, कारण और परिणाम की चिन्ता किए बिना भस्मासुरों का निर्माण करनेवाले मृत पत्नी के शव को कंधों पर उठा पागलों की तरह इधर-उधर भटकनेवाले और समाज के शोषित, उपेक्षित और अपमानित समूहों के साथ एकाकार होकर औधड़ जीवन जीनेवाले शिव ने उनके मानस के अधिकांश भाग को गढ़ा। ध्वंस और निर्माण, क्रोध और करुणा, पार्थिवता और आध्यात्मिकता तात्कालिकता और शाश्वतता आदि परस्पर विरोधी दिखनेवाले गुणों का उनमें अद्भुत सम्मिश्रण देखने को मिलता है। इसीलिए उन्होंने भारतमाता से डॉ० लोहिया ने माँग की कि हे भारत माता! हमें शिव का मस्तिष्क दो, कृष्ण का हृदय दो तथा राम का कर्म और वचन दो हमें असीम मस्तिष्क और उन्मुक्त हृदय के साथ-साथ जीवन की मर्यादा से रचो।⁰⁵

लोहिया को पूर्ण विश्वास था कि 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' के प्राचीन आदर्श और आधुनिक विश्व के समाजवाद स्वातंत्र्य और अहिंसा के तीन सूत्री आदर्श को इस रूप में रखना होगा कि वे उसे एक दूसरे की जगह ले सकें। वही मानव का सुन्दर सत्य होगा और उस सत्य को जीवन में प्रतिष्ठित करने के लिए मर्यादा-अमर्यादा तथा सीमा-असीमा का काफी ध्यान रखना होगा। दुनिया के सभी क्षेत्रों की परम्पराओं द्वारा प्राप्त स्थल कालवद्ध अर्धसत्यों को सम्पूर्ण बनाने की दृष्टि से संशोधन को चेष्टा लोहिया के जीवन की साधना रही है। डॉ० लोहिया को पूर्ण विश्वास था कि सही बात यदि बार-बार और बराबर कही जाय तो धीरे-धीरे लोगों को उसे सुनने की आदत पड़ जाएगी। इसीलिए दूसरों को अजीबोगरीब लगनेवाली अपनी बातें वे निरन्तर जीवन पर्यन्त कहते ही रह।

उनमें विचार, प्रतिभा और कर्मठता का सुन्दर सामंजस्य था। राजनीतिक कर्मयोगी के रूप में उनके देन का मूल्यांकन तत्काल संभव नहीं है, परन्तु जहाँ तक उनके विचारों सिद्धान्तों एवं चिन्तन का सवाल है, उनके साथ भी वही हुआ जो लगभग सभी महान प्रतिभाओं के साथ होता आया है। इस तरह के अनेक अवसर आए जब उनके बहुत से निकटतम साथी भी लोहिया द्वारा उठाए गए महत्त्वपूर्ण सवालों के रहस्य को नहीं समझ सके, और बाद में बहुत पछताए।⁰⁶ डॉ० लोहिया की आत्मा विद्रोही थी। अन्याय का प्रतिकार उनके कर्मों तथा सिद्धान्तों की बुनियाद रही है। प्रवल इच्छा शक्ति के साथ-साथ उनमें धैर्य और संयम भी रहा है। उन्होंने स्वयं लिखा है— मुझे कभी-कभी ताज्जुब होता है कि एक ही तरह के निराधार अभियोग एक ही आदमी के विरुद्ध लगातार क्यों लगाये जाते हैं? मेरे ऊपर दोष लगाने वालों की ताकत यही है कि वे भारतीय शासक वर्ग के ख्यालों के साथ हैं और मैं ठीक उनके विरुद्ध हूँ। इसके अतिरिक्त हमने भारतीय समाज की पुरानी बुनियादों के खिलाफ आवाज उठाई है और उनपर हमला किया है। इसी का नतीजा है कि मुझे देश की सभी स्थिर स्वार्थवाली तथा प्रभावशाली शक्तियों के क्रोध का शिकार बनना पड़ता है।⁰⁷

किसी भी लीक पर चलना उनके स्वभाव में नहीं था। वे किसी प्रवाह में भी नहीं बहे, बल्कि प्रवाह के उलटे तैरने के प्रयोग में उनके विचारों को प्रचार के लिए देश के अखबारों का भी कभी सहयोग नहीं मिला। भ्रामक प्रचार, उपेक्षा तथा भाव लखन द्वारा उनके विचारों को दबाने का हमेशा प्रयास किया गया, लेकिन वे अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सके। उनकी महान कृतियों को जब भुलाना असंभव हो जाता था, तभी आंशिक रूप से उन्हें प्रकाशन मिलता था, वह भी सही रूप में नहीं। बल्कि तोड़-मरोड़कर, अर्थ को अनर्थ करके उनके सामने पेश किया जाता था। दूसरी तरफ हर झूठ का बराबर खण्डन करते रहना तथा सफाई देना डॉ० लोहिया जैसे स्वाभिमानी देशभक्त के खिलाफ था। उनके विरुद्ध होनेवाले प्रचार इतने अधिक थे कि सभी झूठे भाषण तथा असत्य प्रचार का जबाब देना किसी एक के लिए संभव नहीं था।

डॉ० लोहिया कभी भी लकीर के फकीर नहीं रहे। अन्याय, अविचार, बुराईयों तथा असत्य का उन्होंने हर समय विरोध किया। उनका मानना था कि प्रकट और स्पष्ट अन्यायों के खिलाफ लड़ने की ताकत तभी आएगी, जब उनका विरोध डटकर किया जाए। जब वे इस तरह को लड़ाइयों की शुरुआत करते थे, तब उनका व्यापक महत्त्व न समझकर सत्ताधारी और निहित स्वार्थवाले उन्हें पागल कहने की स्थिति तक बौखला जाते थे। लोहिया के विचारों व सिद्धान्तों को जनता तक न पहुँचने दिया जाय, इसीलिए उपेक्षा अपमान मिथ्या प्रचार और बदनामी के नुकीले अस्त्र-शस्त्रों द्वारा उनके मानस शरीर को सदा ही छलनी करने की सतत अमानवीय कोशिश की गई थी। डॉ० लोहिया अपने-आप में स्वयं इतिहास थे।⁰⁸ उनकी प्रतिभा आज पूर्ण और कर्म सामर्थ्य से सामान्य स्त्री-पुरुषों की प्रतिभा तथा कर्म का गुप्त सामर्थ्य अब जाग उठा है। उनके चेहरे तथा शरीर का वर्णन करते हुए श्रीमति इन्दुति केलकर

ने, जिन्होंने काफी नजदीक से उन्हें देखा था, उनका कहना था कि—सांवली नाटी सी पहलवानी साँचे में ढली मूर्ति, विशाल माथा, चश्में के शीशे में चमकने वाली तीखी बाँधनेवाली नजर, आत्मविश्वास की दृढ़ता और गहराई का संकेत देने वाली ठोढ़ी, होठों के किनारों से छलकती शरारत भरी नटखट हँसी, दिलदार खुली तवियत, उत्फुल्ल मानसिकता आदि प्रमुख विशेषताएँ डॉ० लोहिया के व्यक्तित्व की थी।⁹ लेकिन क्या चेहरे की बनावट से किसी के व्यक्तित्व का आकलन किया जा सकता है? सुकरात, गाँधी, अब्राहम लिंकन, जयापाल, सार्त्र और महाभारत के रचयिता महर्षि वेद व्यास आदि के चेहरों को देखकर किसी ने शायद ही सोचा होगा कि इन व्यक्तित्वों की झलक उनके चेहरों से मिल सकती थी।¹⁰

अतीत से मिले गुणों अथवा अवगुणों के आधार पर किसी के व्यक्तित्व का आकलन करना जातिवाद, नस्लवाद और लिंगवाद को बढ़ावा देने के समान है। इसलिए लोहिया व्यक्ति को उसके कामों और इरादों से समझने तथा जानने के पक्षधर थे। इस दृष्टि से वे सार्त्र आदि अस्तित्ववादियों के ज्यादा निकट थे, जिन्हें इस बात का पता था कि व्यक्ति की पहचान उसके इरादों से भविष्य के सम्बन्ध में उसके संकल्प से की जानी चाहिए। मानव का शरीर तो अतीत की निर्मिति होता है, लेकिन मन अतीत की निर्मिति नहीं होना चाहिए।¹¹ सार्त्र का यह वाक्य कि मैं वह नहीं हूँ, जो हूँ, मैं वह हूँ, जो नहीं हूँ, डॉ० लोहिया पर भी घटित होता है। उन्होंने माना कि किसी व्यक्ति का बुत या स्मारक उसके मरने के तीन सौ साल बाद बनाया जाना चाहिए, जब उसके काम का पूर्वाग्रह रहित मूल्यांकन होने लगता है और ख्याति की धुंध छट जाती है। जब उन्होंने कहा कि 'लोग मुझे समझेंगे' जरूर' लेकिन मेरे मरने के बाद' तो भी उनके मन में यही विचार रहा होगा कि उनके कार्य का मूल्यांकन आनेवाले पीढ़ियाँ अवश्य करेंगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. राम मनोहर लोहिया—व्यक्तित्व और विचार का आलेख— पृ०—11.
2. डॉ० ओंकार शरद— लोहिया के विचार—लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद— सातवाँ सं०—2013 पृ०—आमुख ।
3. डॉ० राम मनोहर लोहिया—इतिहास चक्र— पृ०—11.
4. लोहिया के विचार—उपर्युक्त— पृ०—12.
5. मस्तराम कपूर द्वारा संपादित—राम मनोहर लोहिया रचनावली भाग—1 राम मनोहर लोहिया समता न्यास परिषद्, हैदराबाद, सं०—2012, पृ०—13.
6. लोहिया के विचार—उपर्युक्त— पृ०—12.
7. उपर्युक्त— पृ०—13.
8. डॉ० लोहिया— इतिहास चक्र— पृ०—15.
9. लोहिया के विचार—उपर्युक्त, पृ०—14.
10. उपर्युक्त, पृ०—वही ।
11. राम मनोहर लोहिया रचनावली—उपर्युक्त, पृ०—11.